श्री बाँके बिहारी जी महाराज

श्रीबिहारीजी महाराज के दर्शन तो आपने किये ही होंगे। मन्दिर के विशाल चौक में प्रवेश करते ही ऊँचे जगमोहन के पीछे निर्मित गर्भग्रह में भव्य सिंहासन पर विराजमान श्रीबिहारीजी के दर्शन होते हैं। उत्सवों के अवसर पर और ग्रीष्म ऋतु में जब फूल-बंगले बनते हैं तब श्री बिहारीजी महाराज जगमोहन में विराजते हैं और परमोत्कृष्ट साज-श्रंगार के साथ अपने भक्तों को दर्शन देते हैं तथा सभी भक्तों की मनोकामनाओं को पूरा करते हैं।

आइये ! एक बार पुनः बिहारीजी महाराज के दर्शन कीजिए। सिंहासन पर बीचोंबीच श्रीबिहारीजी महाराज विराजमान हैं। उनके वामांग में उनकी प्रियतमा परम दुलारी श्री श्यामा प्यारी (राधा जी) की गद्दी सेवा है और उन्हीं के बगल में छोटे से चित्रपट के रूप में विराजमान हैं श्री स्वामी हरिदास जी ! आइये इन स्वामी हरिदासजी के बारे में कुछ जानें......

श्रीस्वामी हरिदास जी का जन्म संवत **1535** में हरिदासपुर नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री आशुधीर जी एवं माता का नाम गंगा देवी था। इनके भाइयों का नाम श्रीजगन्नाथ जी एवं श्री गोविन्द जी था। **25** वर्ष की अवस्था में अपने समस्त धन-धाम का परित्याग कर श्रीस्वामी हरिदासजी अपने पूज्य पिता श्री आशुधीर जी महाराज से दीक्षा लेकर श्रीधाम वृन्दावन में परम रमणीय निधिवन नामक नित्यविहार की भूमि में आकर निवास करने लगे। उनके साथ उनके भतीजे बीठलविपुल जी भी आये थे। उस समय संवत् **1560** (सन् **1503**) में श्री वृन्दावन एक गहन वन था एवं वृन्दावन में भवन व सड़कें भी नहीं थी। श्रीस्वामी हरिदास जी ने वृन्दावन में निवास किया और वहाँ परम विलक्षण रस-रीति का प्रवर्तन किया। श्री स्वामी हरिदास जी महाराज नित्य-निकुँज लीलाओं में ललिता स्वरूप हैं वे नित्यविहार के नित्य समुद्र में रसमग्न रहकर प्रिया-प्रियतम का साक्षात्कार करते हुए उन्हीं की केलियों का गान करते थे। स्वामी जी जब भी अपने तानपुरे पर संगीत की आलौकिक स्वर लहरियाँ बिखेरते थे तब सम्पूर्ण वृन्दावन थिरकने लगता था, एक आलौकिक छटा बिखर जाती थी, सभी पशु-पक्षी भी मंत्र मुग्ध होकर उनका संगीत सुनने लगते थे। उनके भतीजे बीठलविपुल जी हमेशा सोचते थे कि स्वामीजी का संगीत किसके लिए समर्पित है। उसी प्रश्न के साथ एक और पश्न जुड़ गया कि स्वामीजी जिस निकुंज के द्वार पर बैठकर संगीत की रागिनी छेड़ते हैं, उसके भीतर कौन विद्यमान है जिससे वे एकान्त में बातें भी करते हैं। श्रीबीठलविपुलजी ने अनेक बार उसके भीतर झाँककर देखा था – किन्तु अंधेरे के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं दिया था।

एक दिन स्वामी हरिदासजी ने बीठलविपुल जी को अपने पास बुलाया और पूँछा – "जानते हो, आज क्या है?"

बीठलविपुल जी ने कहा – "नहीं तो, मुझे बताओ आज क्या है?"

हरिदास जी ने उत्तर दिया – "देखो, आज तुम्हारा जन्मदिन है और इस अवसर पर मैं तुम्हें कुछ सौगात देना चाहता हूँ।"

बीठलविपुल जी बोले – "मुझे कोई सौगात नहीं चाहिए। मैं तो उस निकुंज द्वार का रहस्य जानना चाहता हूँ और आपके प्राणाराध्य श्यामा-कुँजबिहारी के स्वरूप की एक झलक पाना चाहता हूँ।"

स्वामीजी बोले – "वही तो में तुम्हें बताना चाहता हूँ। बुलाओ जगन्नाथ जी को और भी सबको।"

यह सुनकर बीठलविपुल जी बहुत खुश हुए। हरिदासजी के भ्राता जगन्नाथजी भी वहीं थे और भी समाज जुड़ गया। स्वामीजी नेत्र मूँदे तानपुरा लेकर बैठे थे। सभी विमुग्ध थे और रस में डूबे थे। संगीत के स्वरों के आरोह के साथ ही सबने अपने अन्तर में एक अद्‌भुद प्रकाश का अनुभव किया। तभी उस नूतन निकुँज में नील-गौर-प्रकाश की कोमल किरणें फैलने लगीं। सब एकटक होकर देख रहे थे, कुछ दिव्य घटित होने जा रहा था। प्रकाश बढ़ता गया और इसी बीच परस्पर हाथ थामे श्यामा-कुँजबिहारीजी के दर्शन हुए। स्वामीजी ने गाया–

"माई री सहज जोरी पकट भई जु रंग की गौर श्याम धन-दामिनि जैसे।
प्रथम हूँ हुती, अबहूँ आगे हूँ रहिहै, न टरिहै तैसें।।
अंग - अंग की उजराई, सुघराई, चतुराई, सुन्दरता ऐसे।
श्रीहरिदास के स्वामी श्यामा - कुँजबिहारी सम वैस वैसे।।"

पद समाप्त होते ही श्यामा–कुंजबिहारीजी बोले– "तुम्हारी मनोकामना पूर्ण हुई। अब हम यहाँ इसी रूप में अवस्थित रहेंगे।"

स्वामीजी बोले – "प्राणाधार, आप ऐसे ही....... ।निकुँज के बाहर आपकी सेवा कैसे होगी? विष्णु–शिव–इन्द्र आदि की सेवा का तो वैदिक विधान है"

श्यामा–कुँजबिहारी जी बोले – "सेवा तो लाड़ प्यार की होगी।"

तभी स्वामीजी ने निवेदन किया, "आपके सौंदर्य को लोक सहन नहीं कर पायेगा। अतः आप एक ही रूप में प्रकाशित होकर दर्शन दें।" तभी श्यामा–कुंजबिहारी की युगल छवि बाँकेबिहारी जी के रूप में प्रतिष्ठित हो गयी। स्वामी जी और बाँकेबिहारी जी की महिमा जब हरिदासपुर पहुंची तो जगन्नाथ जी के तीनों पुत्र – श्रीगोपीनाथ जी, श्रीमेघश्यामजी और श्री मुरारीदासजी वृन्दावन आ गये। स्वामीहरिदास जी की केवल एक ही इच्छा थी कि बिहारी जी के सेवा लाड़–प्यार से हो। स्वामीजी ने बिहारीजी की तीन आरतियों का क्रम निर्धारित किया था– सुबह श्रंगार आरती, मध्याह्न राजभोग आरती और रात को शयन आरती। स्वामीजी नें बिहारीजी की सेवा श्रीजगन्नाथ जी एवं उनके तीनों पुत्रों को सौंप दी। तभी से श्रीजगन्नाथ जी के वंशज श्रीबिहारीजी की परम्परागत सेवा करते आ रहे हैं।

कई वर्षो तक श्रीबिहारीजी महाराज की सेवा का क्रम निधिवन में ही चलता रहा। कालान्तर में आवश्यकता के अनुसार उन्हें सन् **1864** में इस भव्य मंदिर में स्थानान्तरित कर दिया गया, जहाँ वे आज विराजमान हैं। इस मन्दिर का निर्माण गोस्वामियों द्वारा दिये गये तन–मन–धन सहयोग द्वारा कराया गया।

श्रीबिहारीजी महाराज की उपासना प्रेम रस की उपासना है, किसी एक विधि–विधान, कर्मकाण्ड या सम्प्रदायवाद के दायरे में यह नहीं समा सकती। यही कारण है कि सभी सम्प्रदायों, मतों और धार्मिक विश्वास के वे व्यक्ति, जिनका हृदय पेम रस से भरा है, यहाँ आते हैं और अपनी भक्ति भावना के अनुसार फल पाते हैं। श्रीबिहारीजी नित्यधाम वृन्दावन में नित्य लीलारत हैं। ये सब अवतारों के अवतारी हैं। ये दो होकर भी एक हैं और एक होकर भी दो। ये न निर्गुण हैं न सगुण अपितु दोनों से ही विलक्षण हैं। "निर्गुन–सगुन डबा हैं रतन बिहारीलाल।" ये निर्गुण–सगुण रूप, दो पल्लों वाली डिबिया के मध्य रखे हुए रत्न हैं। ये सबके हैं और सब इनके हैं। स्वामीजी कहते हैं – "मीत भले पाये बिहारी, ऐसे पावौ सब कोऊ।" गरीब–अमीर–अपढ़–कुपढ़, विज्ञ –विवेकी सबको इन्हें पाने का हक है इन्हें पा लेने के बाद फिर और कुछ पाना शेष नहीं रहता।

"बाँके की बाँकी झाँकी करि, बाँकी रह्यो कहा है।"

आइये... बाँकेबिहारीजी की इस बाँकी छवि के दर्शन फिर एक बार करते हैं। ध्यान से दर्शन करिये – सिर पर टेढ़ी पाग है, टिपारे–कटारे–किरीट की शोभा है तो साथ में माथे पर बिन्दी दिप रही है और नाक पर बेसर और कटी में पटका है, तो पास ही नागिन सी लहरदार वेणी है। झगा है, पायजामा है तो घुमावदार लहंगा और पीठ पीछे इकलाई भी है। एक ओर श्याम का साज है तो दूसरी ओर श्यामाजू का श्रंगार। श्यामाजू के वस्त्राभूषणों के दर्शन तो सबको होते हैं, किन्तु उनके स्वरूप का साक्षात्कार कोई रसिक प्रेमी ही कर सकता है। जब स्वामी जी की कृपा होती है, तभी श्याम तमाल से लिपटी कंचन लता की तरह अथवा सघन घन में कौंधती हूई विद्युत लता की तरह श्रीबाँकेबिहारीजी के स्वरूप से झाँकती हुई श्यामा जू की शोभा को निहारा जा सकता है। इसीलिए कहा गया है......

कूँची नित्यविहार की, श्रीहरिदास के हाथ।
सेवत साधक सिद्ध सब, जाँचत नावत माथ।

Tel :+91-565-2444858
Mob.:+91-9897233358 (Anand Bihari Goswami)
9897919717 (Nikhil Goswami)
www.bankeybihari.info